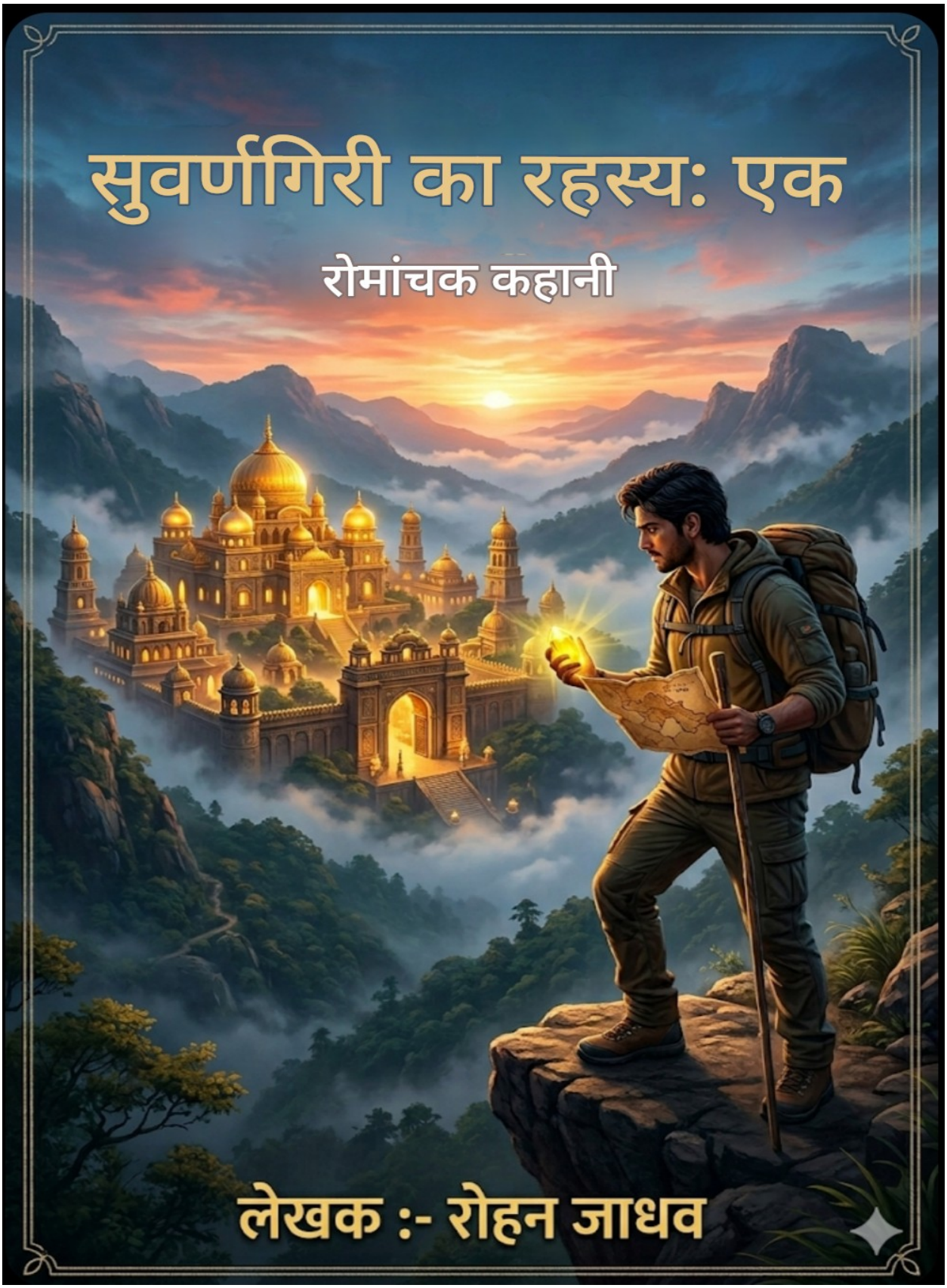
सुवर्णगिरी का रहस्य: एक
रोमांचक कहानी
लेखक :- रोहन जाधव

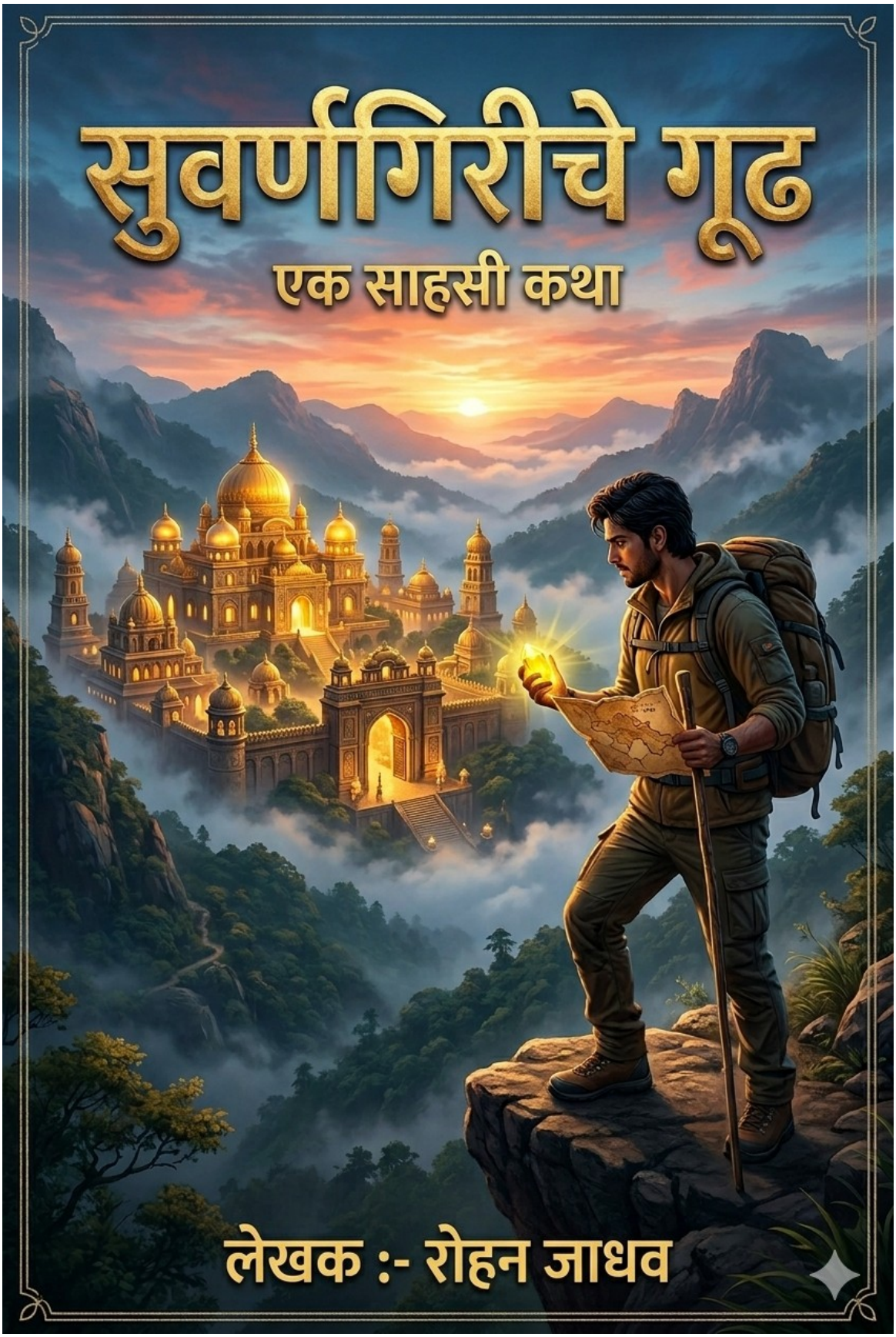
सुवर्णगिरीचे गूढ
एक साहसी कथा
लेखक :- रोहन जाधव

खंड एक: अंधकारमय महल और समय का मोड़।

सह्याद्री पर्वतमाला में स्थित 'तम्हांगड' एक बहुत पुराना और एकांत गांव है। चारों ओर से आसमान छूते ऊंचे पहाड़ों और घने जंगलों के कारण यह गांव बाहरी दुनिया से पूरी तरह कटा हुआ था। बारिश का दिन था। आसमान काले बादलों से भरा था और गरज सीने को गरज रही थी। ऐसी ही भयानक तूफानी रात में, गांव के द्वार पर स्थित एक जर्जर और खस्ताहाल महल में, हाथ में लालटेन लिए एक युवक खड़ा था। उसका नाम विक्रम था।

विक्रम गाँव के अन्य युवकों से अलग था। उसे खेती-बाड़ी या पारंपरिक व्यवसायों में कोई रुचि नहीं थी। बचपन से ही उसे पुरानी चीजों, लुप्त इतिहास और साहसिक यात्राओं से गहरा लगाव था। द्वार पर स्थित यह किला दशकों से वीरान पड़ा था। गाँव वाले दिन में भी इस किले में नहीं आते थे; लेकिन विक्रम को हमेशा लगता था कि इस किले की दीवारें उसे कुछ कहना चाह रही हैं।

लालटेन की पीली रोशनी में महल के खंडहर और भी भयावह लग रहे थे। बारिश के पानी से लकड़ी के खंभे सड़ चुके थे और जालीदार कोनों में मकड़ियों ने अपने बड़े-बड़े जाले बुन रखे थे। विक्रम सावधानी से महल के भीतरी हॉल में पहुँचा। वहाँ, ज़मीन पर बिछे एक बड़े शतरंज के बोर्ड के नीचे, उसने एक लकड़ी का दरवाज़ा देखा। दरवाज़ा बहुत भारी था और उसमें लोहे की सलाखें लगी हुई थीं। अपने शरीर की पूरी ताकत इकट्ठा करके, विक्रम ने दरवाज़ा खोला। दरवाज़ा एक भयानक चरमराहट की आवाज़ के साथ खुला और अंदर से एक बासी, दुर्गंधयुक्त गंध विक्रम की नाक में घुस गई।

नीचे तहखाना था। संकरी पत्थर की सीढ़ियाँ अंधेरे में डूबी हुई थीं। विक्रम ने लालटेन जलाई और सीढ़ियाँ उतरने लगा। तहखाना एकदम शांत था, वहाँ केवल बारिश की आवाज़ और हवा चलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। तहखाने के ठीक बीच में, एक पत्थर के चबूतरे पर लकड़ी का एक नक्काशीदार बक्सा रखा था। बक्से पर धूल और गंदगी की मोटी परत जमी हुई थी।

विक्रम ने कांपते हाथों से बक्सा खोला। अंदर सोने-चांदी के सिक्के नहीं थे, बल्कि चमड़े के आवरण में लिपटा एक चर्मपत्र था। सैकड़ों वर्षों के बीतने के कारण वह चर्मपत्र बहुत नाजुक हो गया था। विक्रम ने बड़ी सावधानी से उसे खोला। उस पर लाल स्याही से बना एक बड़ा नक्शा था और उसके चारों ओर एक प्राचीन लिपि में लिखा हुआ था जिसे विक्रम ने पहले कभी नहीं देखा था। नक्शे के केंद्र में एक पर्वत का चित्र था और उस पर सूर्य की किरणें पड़ती हुई दिखाई गई थीं।

अगली सुबह, जब बारिश थम गई, तो विक्रम नक्शा लेकर गाँव के सबसे बुजुर्ग और ज्ञानी व्यक्ति, धोंडीबा तात्या के पास गया। धोंडीबा तात्या को प्राचीन लिपियों और इतिहास का गहरा ज्ञान था। नक्शा देखते ही उनके चेहरे की झुर्रियाँ और भी गहरी हो गईं और उनकी आँखों में एक प्रकार का भय छा गया।

“पुत्र, तुमने क्या खोजा है?” तात्या की आवाज़ कांप रही थी। उन्होंने गहरी सांस ली और बोलना शुरू किया, “यह नक्शा ‘सुवर्णगिरि’ का है। सैकड़ों वर्ष पूर्व, हमारे सह्याद्री पर्वतमाला के पार, एक अत्यंत उन्नत और समृद्ध नगर था। वहाँ की सड़कें सोने की ईंटों से बनी थीं और घर हीरे-मज्जों से जड़े हुए थे। परन्तु उस नगर के राजा ने अमरता की लालसा में प्रकृति के नियमों का उल्लंघन किया। एक भयानक श्राप के कारण, सुवर्णगिरि नगर रातोंरात एक रहस्यमयी कोहरे में हमेशा के लिए डूब गया। कई लोगों ने उसे खोजने का प्रयास किया, लेकिन उस मार्ग पर चलने वाला एक भी व्यक्ति जीवित नहीं लौटा।”

धोंडीबा तात्या की बातें सुनकर विक्रम के दिल में दर्द सा उठा, लेकिन साथ ही उसका संकल्प और भी मजबूत हो गया। वह किसी भी कीमत पर उस खोए हुए सोने को ढूंढना चाहता था।

"मुझे वह शहर ढूंढना है, तात्या। मुझे इस नक्शे पर रास्ता समझाओ," विक्रम ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा।

पिता ने उसे समझाने और खतरे से आगाह करने की कोशिश की, लेकिन विक्रम अपनी हठधर्मिता छोड़ने को तैयार नहीं था। अंततः, हताशा में आकर पिता ने नक्शे पर लिखे प्राचीन लेख पढ़े। रास्ता बेहद कठिन था। सुवर्णगिरि के द्वार तक पहुँचने के लिए घने जंगलों, विषैले जानवरों और उलझे हुए रास्तों को पार करना ही एकमात्र रास्ता था।

उस रात विक्रम को नींद नहीं आई। उसने यात्रा की तैयारी शुरू कर दी। उसने अपने साथ एक मजबूत थैला, पानी से भरा चमड़े का थैला, जंगल में रास्ता साफ करने के लिए एक तेज दरांती और अपने दादाजी की पुरानी तलवार ली। सुबह मुर्गे की बांग से पहले, जब पूरा गाँव गहरी नींद में सो रहा था, विक्रम ने ताम्हांगड का द्वार पार किया। सामने फैला विशाल और भयानक जंगल उसे पुकार रहा था। यह एक अनजानी और रोमांचकारी यात्रा की शुरुआत थी। उसने सुवर्णगिरि के रहस्य को सुलझाने के लिए मृत्यु की ओर पहला कदम बढ़ा दिया था।

खंड दो: विषैला जंगल और भूत।

विक्रम ने ताम्हांगड द्वार पार किया और जंगल ने उसे घेर लिया। हवा अचानक ठंडी और नम हो गई। पेड़ों की शाखाएँ इतनी उलझी हुई थीं कि सूरज की रोशनी भी ज़मीन तक नहीं पहुँच पा रही थी। इसे 'ज़हरीला जंगल' कहा जाता था। नक्शे में इस जंगल का वर्णन था, लेकिन असलियत इससे भी कहीं ज़्यादा भयानक थी। ज़मीन पर कोई हरियाली नहीं थी, बल्कि अजीबोगरीब ज़हरीली लताएँ और भूतिया दिखने वाले मशरूम उग रहे थे। विक्रम के हर कदम के साथ एक तीखी, खट्टी गंध उसकी नाक में घुसती जा रही थी। उसे लगातार अपनी कमर पर बंधी नुकीली दरांती से हवा को शुद्ध करना पड़ रहा था।

धीरे-धीरे उसे एहसास हुआ कि इस जंगल में कोई अलग, रहस्यमयी शक्ति काम कर रही है। हवा न होते हुए भी पेड़ों के पत्ते अजीब तरह से फड़फड़ा रहे थे। कहीं से फुसफुसाती हुई आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। कभी उसे अपने पिता की, कभी अपनी माँ की, और कभी धोंडीबा तात्या की आवाज़ सुनाई देती। वे आवाज़ें उसे वापस लौटने, इस पागलपन को रोकने के लिए कह रही थीं।

"विक्रम, वापस आ जाओ... यह मृत्यु का द्वार है..." एक आवाज उसके कान के पास से गुजरी। उसने अपनी तलवार को कसकर पकड़ रखा था, लेकिन उसे कोई दिखाई नहीं दिया। उसे नहीं पता था कि यह उसका भ्रम था या इस जंगल का मायाजाल। वह चलता रहा। उसका शरीर भूख और प्यास से थक चुका था, लेकिन उसका इरादा अटल था।

एक जगह विक्रम ने एक विशाल, पुराना बरगद का पेड़ देखा। उसकी शाखाएँ इतनी लंबी थीं कि ज़मीन तक पहुँचकर फिर ऊपर उठ जाती थीं। पेड़ के तने पर अजीबोगरीब, प्राचीन चिन्ह

खुदे हुए थे। उन चिन्हों से एक तरह की गहरी नीली रोशनी निकल रही थी। विक्रम सावधानी से पेड़ के पास पहुँचा। अचानक, पेड़ की शाखाएँ सजीव हो उठीं और साँपों की तरह उसकी ओर दौड़ पड़ीं।

विक्रम ने समय रहते हंसिया से लताओं को काटकर अपनी जान बचा ली। लताओं पर एक काला, जहरीला तरल पदार्थ निकला। उसे एहसास हुआ कि यह पेड़ दुर्लभ है। वह तुरंत वहां से निकल गया।

आगे का सफर और भी कठिन था। जंगल पर एक रहस्यमयी कोहरा छाया हुआ था। उस कोहरे में रास्ता खोजना नामुमकिन था। नक्शे पर निशान धुंधले हो गए थे। विक्रम को ऐसा लग रहा था जैसे वह एक ही जगह पर गोल-गोल घूम रहा हो। उसे वह रहस्यमयी आवाज फिर सुनाई देगी।

"तुम रास्ता भटक गए हो, विक्रम... तुम कभी सुवर्णगिरि नहीं पहुँच पाओगे..."

वह प्यास से व्याकुल था। अचानक उसने एक पेड़ के पास पानी का एक छोटा सा तालाब देखा। पानी साफ और पारदर्शी था। विक्रम पानी पीने के लिए झुका। लेकिन उसकी नज़र पानी में अपनी नहीं, बल्कि एक पीले, कंकालनुमा इंसान के चेहरे के प्रतिबिंब पर पड़ी। चेहरा मुस्कुरा रहा था, एक भयानक, डरावनी मुस्कान।

विक्रम ने डर के मारे पानी नहीं पिया और तालाब से दूर चला गया। उसे एहसास हो गया था कि इस जंगल में कुछ भी भरोसेमंद नहीं है। वह उसी तरह चलता रहा।

अंततः, उसे एक विशाल, प्राचीन गुफा दिखाई दी। गुफा के प्रवेश द्वार पर एक विशाल पत्थर की मानव चेहरे की मूर्ति खुदी हुई थी। चेहरे की आंखें हरी चमक रही थीं। नक्शे में इस गुफा का नाम 'ज्ञानगुहा' बताया गया था। विक्रम समझ गया कि सुवर्णगिरि जाने का रास्ता इसी गुफा से होकर गुजरता है।

वह गुफा में प्रवेश करने के लिए आगे बढ़ा। अचानक, पत्थर की मूर्ति बोलने लगी। उसकी आवाज गूंजती हुई और भयानक थी।

"जब तक आप मेरे किसी एक प्रश्न का उत्तर नहीं देते, तब तक आप इस गुफा में प्रवेश नहीं कर सकते।"

विक्रम एक पल के लिए रुका। वह जानता था कि इस गुफा में प्रवेश किए बिना वह सुवर्णगिरि नहीं पहुँच सकता।

"इस सवाल पर सोचो," उसने बेबाकी से कहा।

मूर्ति ने प्रश्न पूछा: "मैं वह हूं जो किसी के लिए अदृश्य नहीं हूं, लेकिन मैं हर किसी को बदल देता हूं। मैं राजाओं को साधारणों में और साधारणों को राजाओं में बदल देता हूं। मैं बिना भूले चलता हूं। मैं कौन हूं?"
विक्रम सोचने लगा। यह सवाल पेचीदा था। "मुझे तो ऐसा नहीं लगता, पर इससे सब बदल जाते हैं... यह राजाओं को साधारण बना देता है..." उसे धोंडीबा तात्या द्वारा सुनाई गई सुवर्णगिरि की कहानी याद आ गई। राजा का लोभ, अमरता की लालसा... और अचानक एक भयानक श्राप।
उसने मूर्ति की ओर देखा। मूर्ति की आँखें हरी चमक रही थीं। वह मुस्कुराया।
"काला..." उसने धीरे से कहा।
पत्थर की मूर्ति मुस्कुराई। "बिल्कुल सही," उसने कहा।
उसकी आंखों की हरी चमक गायब हो गई और मूर्ति एक तरफ हट गई, जिससे गुफा का प्रवेश द्वार खुल गया।
विक्रम गुफा में दाखिल हुआ। गुफा बहुत बड़ी और अंधेरी थी। लेकिन उसने देखा कि गुफा की दीवारों पर कुछ प्राचीन नक्काशी थी। नक्काशी में सुवर्णगिरि की कहानी और उसे खोजने के लिए आवश्यक 'तीन ताबीजों' का वर्णन था। नक्शे पर बने चिह्न अब स्पष्ट हो गए थे। सुवर्णगिरि का मार्ग उन तीन ताबीजों को खोजने पर निर्भर था।
पहला ताबीज, 'सूर्यकांतमणि', इस गुफा के आगे एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। विक्रम गुफा से बाहर निकला और पहाड़ी पर चढ़ गया। पहाड़ी पर चढ़ाई बहुत कठिन थी। हवा और भी ठंडी हो गई थी और तेज़ हवा चल रही थी। विक्रम के पैर कई बार फिसले, लेकिन उसने हार नहीं मानी।
अंततः वह पर्वत की चोटी पर पहुँच गया। चोटी पर, एक पुराने मंदिर के खंडहरों में, उसे 'सूर्यकांतमणि' मिला। यह एक चमकता हुआ पत्थर था, जो सूर्य के समान था। जैसे ही उसने ताबीज को अपने हाथ में लिया, वह चमकने लगा। उसकी रोशनी में, दूर धुंध में, उसे सुवर्णगिरि के सुनहरे गुंबदों की एक बहुत छोटी, धुंधली झलक दिखाई दी। यह देखकर विक्रम का उत्साह बढ़ गया। वह जान गया कि सुवर्णगिरि अब ज्यादा दूर नहीं है।
तीसरा खंड: पाताल लोक और अग्नि का संरक्षक।

सूर्यकांतमणि रत्न विक्रम के हाथों में आते ही उनके शरीर में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। पत्थर के गर्म स्पर्श ने ठंड से जमे हुए उनके शरीर को नई ऊर्जा प्रदान की। सुवर्णगिरि की राह पर उन्होंने अपनी पहली बड़ी सफलता प्राप्त कर ली थी। लेकिन वे जानते थे कि यह तो बस शुरुआत है। भुजपत्र पर दिए गए नक्शे के अनुसार, अब उन्हें एक और रत्न—'अग्निरत्न'—की खोज करनी थी।

विक्रम ने चमकदार रत्न को अपने कपड़े के थैले में सुरक्षित रखा और ऊँचे पहाड़ के दूसरी ओर उतरने लगा। जैसे-जैसे वह नीचे उतरता गया, हवा में ठंडक कम होती गई और एक अजीब सी गर्मी बढ़ने लगी। कोहरा छंट गया और उसके सामने एक बेहद भयानक, काला और वीरान इलाका फैल गया। वहाँ पेड़ों का कोई नामोनिशान नहीं था। ज़मीन में बड़ी-बड़ी दरारें थीं और उनमें से लाल, गर्म लावा धीरे-धीरे बह रहा था। चारों ओर की हवा सल्फर की तेज़ और दम घोंटने वाली गंध से भरी हुई थी।

नक्शे पर बने निशान उसे एक बहुत गहरी घाटी की ओर ले जा रहे थे। घाटी के तल में एक विशाल गुफा थी। उसका मुँह किसी राक्षस के खुले जबड़े जैसा लग रहा था। गुफा के अंदर से लाल रोशनी और धुआँ निकल रहा था। यही 'पाताल लोक की गुफा' थी, जहाँ दूसरा रत्न छिपा हुआ था। विक्रम ने अपनी कमर से बंधी पानी की थैली निकाली, पानी की आखिरी कुछ घूंटें पीं और गुफा में प्रवेश कर गया।

गुफा के अंदर गर्मी असहनीय थी। विक्रम के शरीर से पसीना बहने लगा। ज़मीन पर पड़े पत्थर इतने गर्म थे कि उसके चमड़े के जूते भी झनझना रहे थे। लेकिन विक्रम रुका नहीं। उसने एक-एक करके सावधानी से कदम बढ़ाए। जैसे-जैसे वह गुफा के अंदर जाता गया, वह और चौड़ी होती गई।

अंततः वह एक विशाल भूमिगत कक्ष में पहुँचा। उस कक्ष के मध्य में उबलते लावा का एक बड़ा कुंड था। उस कुंड के ठीक बीच में एक काला पत्थर का स्तंभ था, और उस स्तंभ पर एक लाल, आकर्षक पत्थर रखा हुआ था। यही 'अग्निरत्न' था। ऐसा प्रतीत होता था मानो उस रत्न से सचमुच आग की लपटें निकल रही हों।

लेकिन उस चट्टान तक पहुँचना आसान नहीं था। चट्टानों के उस तालाब में कूदना नामुमकिन था। तालाब में कुछ काली चट्टानें आधी डूबी हुई थीं, जिससे खंभे तक पहुँचने के लिए थोड़ी सी जगह बची थी। विक्रम ने अंदाज़ा लगाया। वह एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदकर खंभे तक पहुँच सकता था। उसने गहरी साँस ली और पहली चट्टान पर कूद गया।

वह अभी तीन-चार चट्टानें पार करके खंभे तक पहुँचा ही था कि अचानक पूरी गुफा कांपने लगी। उबलते लावा से भयंकर बुलबुले फूटने लगे और पल भर में ही एक विशाल आकृति तालाब से प्रकट हुई।

यह एक विशालकाय अग्निनाग था। इसके शल्क काले लोहे के समान कठोर थे और आँखों के स्थान पर दो धधकते अंगारे थे। इसके मुख से नीली ज्वालाएँ निकल रही थीं। सुवर्णगिरि के राजा ने इस रत्न की रक्षा के लिए इस भयानक प्राणी को वहाँ बाँध रखा था। अग्निनाग ने एक भयानक दहाड़ लगाई और विक्रम की ओर दौड़ पड़ा।

विक्रम ने अपनी फुर्ती से खुद को बचा लिया। उसे तुरंत एहसास हुआ कि तलवार का वार सर्प के कठोर शल्कों पर कोई असर नहीं करेगा। सर्प उस पर दोबारा हमला करने की तैयारी कर रहा था। अब क्या करना है, यह सोचते हुए विक्रम को याद आया कि यह प्राणी सदियों से इस गहरे अंधकार में रह रहा था। यह अंधकार और आग का आदी था, लेकिन तेज रोशनी का नहीं।

विक्रम ने बिना किसी झिझक के अपने थैले से सूर्यकांतमणि निकाली और उसे साँप की आँखों के सामने रख दिया। सूर्यकांतमणि में मानो एक छोटा सा सूर्य समाहित था। उससे

निकलने वाली सफेद और तीव्र रोशनी उस अँधेरी गुफा में चकाचौंध कर रही थी। वह तीव्र प्रकाश सीधे अग्नि सर्प की आँखों पर पड़ा।
सर्प प्रकाश की किरण सहन नहीं कर सका। वह दर्द से तड़पने लगा। उसका संतुलन बिगड़ गया और वह गर्म चट्टान पर गिर पड़ा। इस अवसर का लाभ उठाते हुए विक्रम ने लंबी छलांग लगाई और मध्य स्तंभ तक पहुँच गया। उसने तुरंत अग्नि रत्न उठा लिया।
जैसे ही विक्रम ने रत्न उठाया, गुफा की गर्मी अचानक कम हो गई, लेकिन उसी समय गुफा की छत गिरने लगी। बड़े-बड़े पत्थर गिरने लगे। पूरा इलाका तबाह होने की कगार पर था। विक्रम ने एक हाथ में सूर्य कांतमणि और दूसरे हाथ में अग्नि रत्न कसकर पकड़ रखा था और अपनी जान जोखिम में डालकर बाहर की ओर दौड़ने लगा। गिरते पत्थरों से बचते हुए, गर्म ज़मीन पर कूदते हुए, वह किसी तरह गुफा से बाहर निकला और एक सुरक्षित चट्टान पर जा गिरा।
उसने अपनी आँखें बंद कीं और गहरी साँस ली। अब उसके पास दो रत्न थे। उसे केवल एक रत्न की आवश्यकता थी, तीसरा और अंतिम रत्न, सुवर्णगिरि के द्वार खोलने के लिए। उसे नहीं पता था कि यह तीसरा रत्न उसे कहाँ ले जाएगा और वहाँ कौन सा मृत्यु-जाल उसका इंतजार कर रहा होगा।
खंड IV: बर्फीला तूफान और हिम तेंदुए की चुनौती।
पाताल लोक से बाहर आने के बाद विक्रम ने कुछ देर आराम किया। लगातार दो भयानक संकटों का सामना करने के बाद उसका शरीर थक चुका था, लेकिन उसके मन में आशा अभी भी प्रबल थी। उसने एक बार फिर अपने थैले से प्राचीन भुजपत्र निकाला। मानचित्र पर बने लाल चिह्न अब एक नई दिशा की ओर इशारा कर रहे थे। मानचित्र पर 'वरुणमणि' नाम से अंकित तीसरा और अंतिम ताबीज़ 'श्वेतशिखर' नामक एक अत्यंत दूरस्थ और दुर्गम पर्वत पर स्थित था। सुवर्णगिरि तक पहुँचने के लिए इस अंतिम रत्न की सख्त आवश्यकता थी।
विक्रम ने अपनी अगली यात्रा शुरू की। जैसे-जैसे वह उत्तरी पर्वत श्रृंखलाओं की ओर बढ़ा, प्रकृति का रंग और रूप पूरी तरह बदलने लगा। खाई के पास की असहनीय गर्मी और काली पड़ी ज़मीन अब पीछे छूट गई थी। हवा में एक अजीब तरह का कोहरा छा गया था। कई दिनों की अथक यात्रा के बाद, विक्रम एक ऐसे क्षेत्र में पहुँचा जहाँ चारों ओर केवल बर्फ की चादर

ही फैली हुई थी। आसमान से लगातार बर्फ गिर रही थी और हड्डियाँ जमा देने वाली ठंडी हवाएँ तेज़ी से बह रही थीं।

ठंड इतनी भीषण थी कि विक्रम के साधारण सूती कपड़े भी उसे बचा नहीं पा रहे थे। उसके होंठ नीले पड़ रहे थे और उंगलियां सुन्न होने लगी थीं। उसे लगा कि वह इस बर्फीली आंधी में मर जाएगा। लेकिन उसी क्षण उसे अपने थैले में रखे अग्नि रत्न की याद आई। कांपते हाथों से उसने लाल धब्बों वाला अग्नि रत्न निकाला और उसे अपने सीने से लगा लिया। उस रत्न से एक अद्भुत और जीवनदायिनी ऊष्मा उसके पूरे शरीर में फैल गई। उस जादुई ऊष्मा के कारण विक्रम को ठंड से राहत मिली और वह नई ऊर्जा के साथ बर्फीले पहाड़ों पर चढ़ने लगा।

कई घंटों की कठिन चढ़ाई के बाद, वह श्वेत शिखर की चोटी पर पहुँच गया। वहाँ, दो ऊँची बर्फीली चोटियों के बीच, एक विशाल, जमी हुई झील थी। झील एक विशाल दर्पण की तरह चमक रही थी। झील के ठीक बीच में बर्फ का एक पारदर्शी और नुकीला स्तंभ था। उस स्तंभ के अंदर एक नीला, चकाचौंध कर देने वाला पत्थर था। यह 'वरुणमणि' था! उस पत्थर से नीली किरणें निकल रही थीं, जो पूरी झील पर एक जादुई प्रकाश बिखेर रही थीं।

विक्रम ने जमे हुए झील पर बहुत सावधानी से कदम रखा। सन्नाटे में बर्फ के चटकने की आवाज़ गूंज रही थी। वह स्तंभ के बिल्कुल करीब पहुँच गया। लेकिन क्या सुवर्णगिरि के राजा ने इस तीसरे रत्न को ज़रा सा भी खुला छोड़ दिया होगा? विक्रम वरुण रत्न को छूने ही वाला था कि झील के नीचे से एक भयानक आवाज़ आई। पूरी झील कांप उठी और बर्फ में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ने लगीं।

उन दरारों से बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े हवा में उड़ गए और उनमें से एक विशाल और भयानक प्राणी प्रकट हुआ। यह एक विशाल हिमवुर्क (बर्फीला भेड़िया) था। इसका पूरा शरीर नुकीले बर्फ के क्रिस्टलों से बना था। इसकी आँखें अथाह गहराई की तरह काली थीं, जबकि इसके मुँह से बर्फीली सफेद भाप निकल रही थी। यह हिमवुर्क वरुणमन की रक्षा के लिए उत्तरदायी था।

भेड़िये ने भयानक दहाड़ मारी और विक्रम पर झपटा। विक्रम फुर्ती से एक तरफ कूद गया। भेड़िये के पंजे बर्फ से रगड़ खाकर एक बड़ा गड्ढा बना गए। विक्रम ने अपनी तलवार निकाली और भेड़िये के पैर पर वार किया। लेकिन तेज बर्फ पर तलवार का कोई असर नहीं हुआ;

बल्कि वह टूट गई। भेड़िये ने अपनी पूंछ से विक्रम को जोरदार प्रहार किया, जिससे विक्रम कई फीट दूर जा गिरा और बर्फ पर जा टकराया।
उन्हें एहसास हुआ कि इस प्राणी को हथियारों से हराना असंभव है। यह एक बर्फीला राक्षस था, और केवल ऊष्मा और प्रकाश ही बर्फ को नष्ट कर सकते थे। विक्रम तुरंत उठे और अपने दोनों हाथों में मौजूद रत्नों को निकाला—एक हाथ में तीव्र प्रकाश का 'सूर्यकांतमणि' और दूसरे हाथ में प्रचंड ऊष्मा का 'अग्निरत्न'।
भेड़िये ने विक्रम को फिर से निगलने के लिए अपने विशाल जबड़े खोले और उस पर झपटा। ठीक आखिरी क्षण में, विक्रम ने सूर्य रत्न को भेड़िये की आँखों के सामने कर दिया। उससे निकलने वाले सूर्य रत्न के समान तीव्र प्रकाश से भेड़िये की आँखें चमक उठीं और वह बुरी तरह छटपटाने लगा। उसी क्षण, विक्रम आगे कूदा और अपने दूसरे हाथ में पकड़े अग्नि रत्न को भेड़िये की छाती पर जोर से दबा दिया।
जैसे ही अग्नि पत्थर की तीव्र गर्मी हिम तेंदुए के शरीर को छूई, उससे भाप निकलने लगी। वह दर्द से तड़पने लगा। उसका बर्फीला शरीर पिघलने लगा। कुछ ही क्षणों में, वह भयानक प्राणी पानी के पोखर में बदल गया। विक्रम ने राहत की सांस ली। वह तुरंत बीच में स्थित बर्फ के खंभे के पास गया और अग्नि पत्थर की गर्मी से उसे पिघला दिया।
अंततः विक्रम ने नीले रंग का चमकता हुआ 'वरुणमणि' रत्न अपने हाथ में ले लिया। जैसे ही रत्न उसके हाथ में आया, उसके थैले में रखे हुए बाकी दो रत्न भी बाहर आ गए और तीनों रत्न हवा में तैरने लगे। लाल, सफेद और नीली तीनों रोशनी आपस में मिल गईं और आकाश की ओर प्रकाश की एक विशाल किरण फैल गई।
उस प्रकाश की किरण ने श्वेतशिखर के सामने स्थित एक विशाल पर्वत के किनारे को दो भागों में बाँट दिया। जैसे ही किनारा फटा, उसके पीछे छिपा हुआ एक भव्य, पूर्णतः स्वर्ण का द्वार प्रकट हुआ। वह द्वार हीरों और माणिक्यों से जड़ा हुआ था। हजारों वर्षों से छिपा हुआ, दुनिया की निगाहों से ओझल, 'स्वर्ण पर्वत' अंततः विक्रम के सामने खड़ा था! विक्रम की आँखें चौड़ी हो गईं और उसका दिल तेजी से धड़कने लगा।
पांचवां खंड: स्वर्ण नगरी में प्रवेश और समय का अभिशाप।

श्वेतशिखारा का विशाल सुनहरा द्वार खुलते ही विक्रम की आँखें चमक उठीं। अंदर से आ रही रोशनी इतनी तीव्र थी कि एक पल के लिए उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। वह सावधानी से अंदर दाखिल हुआ। सामने का नज़ारा देखकर उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। यह पर्वत श्रृंखलाओं के पीछे छिपी एक बिलकुल अलग दुनिया थी।

सड़कें सुनहरी ईंटों से बनी थीं, जबकि घरों की दीवारें क्रिस्टल की तरह चमक रही थीं। जगह-जगह फव्वारे थे, जिनसे पानी नहीं, बल्कि पिघली हुई चांदी जैसा सफेद तरल पदार्थ बह रहा था। लेकिन चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। न किसी पक्षी की चहचाहट, न हवा का झोंका। पूरा शहर किसी चित्र की तरह स्थिर था।

विक्रम सड़क पर चलने लगा। उसने वहाँ कुछ लोगों को देखा। कुछ फल बेच रहे थे, कुछ खड़े होकर बातें कर रहे थे और कुछ रथों में बैठे थे। लेकिन चौंकाने वाली बात यह थी कि वे सभी लोग हिल-डुल नहीं रहे थे। वे जीवित तो थे, लेकिन पत्थर की तरह जमे हुए थे। उनकी हालत ऐसी थी कि कोई साँस लेने की कोशिश कर रहा था और फिर बीच में ही रुक गया।

चलते-चलते विक्रम शहर के बीचोंबीच स्थित महल तक पहुँचा। यह महल आकाश को छूता हुआ था और इसके शिखर पर एक विशाल हीरा जड़ा हुआ था। विक्रम महल की सीढ़ियाँ चढ़कर अंदर गया। वहाँ राजा एक विशाल सिंहासन पर विराजमान थे। उनके हाथ में एक सोने का कटोरा था, जिसे वे अपने होठों से लगाने ही वाले थे कि अचानक वहीं जम गए।

अचानक, महल की दीवारों पर उकेरी गई चित्रकारी हिलने लगी। एक गंभीर और भारी आवाज़ पूरे हॉल में गूंज उठी। "अमरता के पात्र को कोई न छुए, अन्यथा तुम भी समय के इस जाल में हमेशा के लिए फंस जाओगे!"

विक्रम चौंककर पीछे हट गया। उसके सामने एक पारदर्शी आकृति प्रकट हुई। यह सुवर्णगिरि का मुख्य राजपुजारी था, जो अब एक आत्मा के रूप में वहां विचरण कर रहा था।

"पुत्र, तुम कौन हो? और इस शापित शहर में क्यों आए हो?" राजपुजारी ने पूछा।

विक्रम ने हाथ जोड़कर अपनी सारी सच्चाई बता दी। राजपुजारी ने एक लंबी आह भरी और कहा, "हजारों वर्ष पूर्व, इस नगर के राजा विक्रमादित्य (विक्रम के पूर्वज) अमर होने की इच्छा रखते थे। उन्होंने प्रकृति के नियमों को तोड़कर पाताल लोक का अमृत प्राप्त किया। परन्तु जैसे ही उन्होंने उसे अपने होठों से लगाया, प्रकृति क्रोधित हो उठी। इस नगर में समय थम गया। तब से यह स्वर्ण नगर इसी अवस्था में है। यहाँ के लोग न तो मरे हैं और न ही जीवित।"

"लेकिन फिर हम इस अभिशाप से कैसे छुटकारा पाएंगे?" विक्रम ने पूछा।

“इसके लिए आपको ‘समय के पहिये’ को फिर से घुमाना होगा,” राजपुजारी ने कहा। “वह पहिया महल के नीचे एक गुप्त तहखाने में है। लेकिन सावधान रहें, उस पहिये की रक्षा ‘छाया राक्षसों’ द्वारा की जाती है। यदि आप पहिये को घुमाने में सफल होते हैं, तभी यह शहर पुनर्जीवित होगा और आप अपने घर लौट सकेंगे। अन्यथा, आप भी यहाँ की स्वर्ण मूर्तियों में से एक बन जाएँगे।”

विक्रम अब समझ गया था कि उसकी लड़ाई केवल सोने के लिए नहीं, बल्कि अपने पूर्वजों को इस अभिशाप से मुक्त कराने के लिए थी। उसने अपनी तलवार को कसकर पकड़ा और राजपुजारी द्वारा दिखाए गए गुप्त मार्ग की ओर दौड़ पड़ा। उसके पीछे, छाया राक्षसों की भयानक हंसी सुनाई दे रही थी।

अध्याय छह: छाया राक्षसों के साथ युद्ध और समय का चक्र।

महल के तहखाने का मार्ग एक अंतहीन सुरंग जैसा था। ऊपर सुनहरे शहर की जगमगाहट के बिल्कुल विपरीत, यहाँ घना अंधेरा और कंपा देने वाली ठंड थी। विक्रम ने अपने हाथ में 'सनस्टोन' उठाया, जिसकी रोशनी में उसने अपने सामने का भयावह दृश्य देखा।

वहाँ 'समय का पहिया' था—लोहे और अजीब धातुओं से बना एक विशालकाय पहिया, जो युगों से जंग खा रहा था। उस पहिये के चारों ओर, काले धुएँ की तरह, बिना चेहरे वाले 'छाया-राक्षस' मंडरा रहे थे। विक्रम को देखते ही, वे राक्षस आकाश से बिजली की तरह उसकी ओर दौड़ पड़े।

विक्रम ने अपनी तलवार निकाली और पहले राक्षस पर वार किया। लेकिन तलवार उस राख जैसे शरीर के आर-पार निकल गई, मानो वहाँ कुछ था ही नहीं! राक्षस ने विक्रम के हाथ पर पंजे मारे। स्पर्श इतना ठंडा था कि विक्रम का हाथ एक पल के लिए सुन्न हो गया। उसे एहसास हुआ कि इन मायावी राक्षसों को शारीरिक हथियारों से हराना असंभव है।

राक्षस आगे बढ़कर उसे फिर से घेरने लगे। उनकी भयानक चीखों से तहखाना कांप उठा। विक्रम ने शांत मन से सोचा। ये अंधकार के रक्षक हैं, केवल प्रकाश और ऊष्मा ही इन्हें नष्ट कर सकती है। उसने तुरंत अग्नि रत्न निकाला और उसे सूर्य कांतमान से थाम लिया।

दोनों रत्नों के संयोजन से नीले-सफेद रंग की एक विशाल किरण निकली, जो लेजर जितनी शक्तिशाली थी। विक्रम ने उस किरण को राक्षसों की ओर फेंका। जिस राक्षस पर वह किरण पड़ी, वह पल भर में भाप की तरह हवा में विलीन हो गया। यह देखकर अन्य राक्षस भयभीत होकर पीछे हट गए।

इस अवसर का लाभ उठाते हुए विक्रम 'समय चक्र' की ओर दौड़ा। चक्र इतना भारी था कि उसे हिलाना उसके लिए असंभव लग रहा था। विक्रम ने अपने दोनों हाथ चक्र पर रखे और अपनी पूरी ताकत लगा दी। लेकिन चक्र नहीं हिला।

राक्षस एक बार फिर एकजुट हुए और विक्रम पर सामूहिक रूप से हमला कर दिया। इस बार वे सीधे विक्रम के डर पर हमला कर रहे थे। विक्रम को लगा कि वह कभी यहाँ से निकल नहीं पाएगा, यहीं मर जाएगा। उसके हाथ बेजान होने लगे।

"हार मत मानो, विक्रम! तुम अपने पूर्वजों के वंशज हो!" राजपुजारी की आवाज उसके कानों में गूंजी।

विक्रम ने अपनी आँखें बंद कर लीं। उसने अपने मन के भय को दूर भगाया और केवल अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित किया। उसने तीसरा रत्न, 'वरुणमणि' निकाला और उसे चक्र के केंद्र में स्थित खांचे में स्थापित कर दिया।

क्षण भर में वरुण मन से नीली रोशनी निकली और पूरे चक्र को घेर लिया। सूर्यपत्थर और अग्निपत्थर की रोशनी भी उसमें मिल गई। जैसे ही तीनों रत्नों की शक्ति एक साथ मिली, जंग लगा चक्र चरमराहट की आवाज के साथ हिल उठा।

विक्रम ने एक बार फिर बटन दबाया। पहिया घूमने लगा। पहले धीरे-धीरे, फिर तेज़ी से। जैसे ही पहिया घूमने लगा, तहखाने में मौजूद साये के राक्षस आकाश में विलीन हो गए। सुनहरे शहर में 'टिक-टिक' की आवाज़ गूंज उठी। समय की रुकी हुई गति फिर से शुरू हो गई!

विक्रम थकान से चूर होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। लेकिन वह जानता था कि उसका काम अभी पूरा नहीं हुआ है। अब उसे यह तय करना था कि अमरता के उस अमृत का क्या करना है।

सातवां और अंतिम खंड: मुक्ति का सूर्योदय और प्रकृति की विजय।

तहखाने के उस अंधकारमय और धुंधले सन्नाटे में, 'समय का पहिया' अब पूरी गति से घूम रहा था। उसकी कर्कश, जंग लगी और पुरानी आवाज़ अब एक निरंतर और धीमी लय में बदल गई थी। ऐसा लग रहा था मानो इस ब्रह्मांड की धड़कन, इस धरती की धड़कन, जो हज़ारों वर्षों से रुकी हुई थी, एक बार फिर से शुरू हो गई हो। उस विशाल पहिये से उत्पन्न एक अदृश्य, लेकिन अत्यंत शक्तिशाली ऊर्जा, ज़मीन के भीतर से ऊपर की ओर स्वर्ण नगर की ओर बह रही थी।

विक्रम का पूरा शरीर पसीने से भीगा हुआ था। उसके अंगों पर चोट के निशान थे और मांसपेशियों में असहनीय दर्द हो रहा था। फिर भी उसके चेहरे पर एक अजीब सी संतुष्टि थी। वह भयानक, मायावी राक्षस, जो एक परछाई जैसा प्रतीत होता था, अब हमेशा के लिए नष्ट हो चुका था। उसने गहरी सांस ली और सूर्य कांतमणि, अग्नि रत्न और वरुण मणि - इन तीनों रत्नों को सावधानीपूर्वक अपने थैले में रख लिया। अब वह ऊपर जाकर इस रुकी हुई दुनिया को फिर से जीवंत होते देखना चाहता था। भारी कदमों से, लेकिन एक विजेता के अंदाज़ में, वह

तहखाने की अंधेरी और संकरी सीढ़ियों पर चढ़ा और एक बार फिर महल के मुख्य और भव्य प्रांगण में पहुँच गया।

जैसे ही विक्रम दरबार में दाखिल हुआ, उसने एक अजीब और अविश्वसनीय बदलाव देखा। दरबार, जो अब तक एक बेजान तस्वीर की तरह स्थिर और शांत था, किसी कब्रिस्तान की तरह खामोश और निर्मल था, अब धीरे-धीरे हिलने लगा था। हवा में व्याप्त जानलेवा सन्नाटा और घुटन भरी खामोशी गायब हो गई थी। खिड़कियों से आती हवा अब महसूस की जा सकती थी। और सबसे बड़ा बदलाव था - सिंहासन पर बैठे राजा विक्रमादित्य की पलकों की पहली हलचल!

राजा ने गहरी सांस लेने के लिए सीना फुलाया। उनकी नाक से हवा अंदर जाने की आवाज़ साफ सुनाई दी। उनके हाथ में अब भी नीले रंग का शापित 'अमरता का अमृत' से भरा हुआ सोने का अलंकृत पात्र था। राजा ने उलझन में चारों ओर देखा। उनके होंठ सूखे थे। उन्होंने पलकें झपकाईं और अपने सामने खड़े विक्रम को देखा। विक्रम के फटे हुए कपड़े, हाथ में पुरानी तलवार और उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक देखकर राजा आश्चर्यचकित रह गए।

उसी समय, महल के बाहर, गलियों से तरह-तरह की आवाज़ें आने लगीं। घोड़े अचानक हिनहिनाने लगे, रुके हुए फव्वारे फिर से बहने लगे। हज़ारों साल पहले फल बेचने वाले की अधूरी बात अब सच हो गई थी। गलियों में लोग फिर से आपस में बातें करने लगे थे। उन्हें पता ही नहीं था कि उनके जीवन के हज़ारों साल पलक झपकते ही गायब हो गए थे। उनके लिए यह बस एक और पल था। समय की गति उलट गई थी!

दरबार में राजा विक्रमादित्य ने अपनी गंभीर और कर्कश आवाज में कहा, "तुम कौन हो, नौजवान? मेरे दरबार के पहरेदारों ने तुम्हें अंदर कैसे आने दिया? और राजपुजारी कहाँ हैं?"

इससे पहले कि राजा उसके प्रश्न का उत्तर दे पाते, वायु में मंडरा रही राजपुजारी की आत्मा एक वास्तविक, जीवित मनुष्य में परिवर्तित हो गई। राजपुजारी ने जमीन पर कदम रखा। उन्होंने गहरी सांस ली और राजा के सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गए।

"महाराज," राजपुजारी की आवाज़ अब स्पष्ट और जीवंत थी। "यह युवक कोई साधारण भिखारी या चोर नहीं है। यह हमारे ही वंश का, हमारे ही रक्त का एक वीर वंशज है। इसका

नाम विक्रम है। और महाराज, जिस क्षण आप स्वर्णिक प्याला अपने होठों से लगाने वाले थे, वह अब से एक हजार वर्ष पहले की बात है। आप, मैं और यह पूरा स्वर्णिक नगर एक भयानक अभिशाप के कारण कई युगों तक समय की धारा में जमे रहे। इस विक्रम ने मृत्यु के मुंह से बचकर समय के चक्र को फिर से घुमा दिया है और हमें इस जीवित मृत्यु से मुक्ति दिलाई है।"

यह सुनकर राजा विक्रमादित्य अपने सिंहासन से उठ खड़े हुए। उनके चेहरे पर अविश्वास, सदमा और फिर एक अजीब तरह की लालसा के भाव थे। हज़ारों साल? इसका मतलब था कि उनका साम्राज्य, उनके शत्रु, उनका पुराना संसार अब नष्ट हो चुका था। लेकिन उनके हाथ में अभी भी अमृत था।

राजा ने नीले रंग के चमकते अमृत को देखा। वही पुराना, लालची और अमर अभिलाषा उसकी आँखों में एक बार फिर जाग उठी। "हजारों साल बीत गए? वाह! इसका मतलब है कि मेरे सभी पुराने शत्रु अब तक मिट्टी में मिल चुके होंगे। लेकिन मैं जीवित हूँ! और अब अगर मैं इस अमृत को पी लूँ, तो मैं इस नई दुनिया में एक अमर और अजेय देवता के रूप में रहूँगा। मैं अपने इस स्वर्ण नगर के साम्राज्य को पूरी पृथ्वी पर फैलाऊँगा!" राजा प्रसन्नता और उल्लास से हँसते हुए फिर से पात्र को अपने होठों तक ले गया।

"महाराज, रुकिए!" विक्रम की कठोर और तीखी आवाज़ दरबार में गूंज उठी। विक्रम ने राजा की ओर तलवार नहीं उठाई, लेकिन उसकी आँखों में तलवार जैसी धार थी। "क्या तुम्हें अभी तक कुछ समझ नहीं आया? क्या तुम्हें प्रकृति के नियमों को तोड़ने के भयानक परिणाम दिखाई नहीं दे रहे?"

राजा ने विक्रम को क्रोधित निगाहों से देखा। "क्या तुम मुझे उपदेश देने वाले हो? एक राजा को?"

विक्रम ने शांत, लेकिन दृढ़ता से कहा, "हाँ, क्योंकि मैंने मृत्यु के उस भयानक और कपटपूर्ण मार्ग को पार कर लिया है, जिसे आपने स्वयं अपनी इच्छा से बनाया था। मैंने विषैला लावा, मायावी और प्रेतवाधित जंगल, और उस निर्मम हिमभिये को देखा है जिसे आपने अपने इस अमृत की रक्षा के लिए बनाया था। प्रकृति ने किसी को अमरता नहीं दी है। महाराज, अमरता शरीर की नहीं, कर्म की है। व्यक्ति की पहचान पीढ़ी दर पीढ़ी उसके अच्छे कर्मों से जीवित

रहती है। शरीर की अमरता प्रकृति के विरुद्ध किया गया सबसे बड़ा अपराध है। जन्म और मृत्यु समय के दो किनारे हैं, और उससे होकर बहने वाली नदी जीवन है। आपने उस नदी को रोक दिया था। यदि आप अब इस अमृत को पीते हैं, तो समय का चक्र एक बार फिर टूट जाएगा। यह नगर एक बार फिर उसी अंधकारमय, मृत्यु के अभिशाप में डूब जाएगा, और इस बार शायद हमेशा के लिए!"

विक्रम के शब्द इतने सत्य और प्रभावशाली थे कि राजा विक्रमादित्य के हाथ कांपने लगे। उन्हें एहसास हुआ कि उनकी एक गलती के कारण ही उनकी प्रजा हजारों वर्षों तक निर्जीव मूर्तियों की तरह कष्ट भोगती रही। अमरता के लालच में उन्होंने जीवन का सच्चा आनंद, प्रकृति की सुंदरता और मानवीय भावनाओं की गर्माहट खो दी थी। एक राजा के रूप में उनका कर्तव्य अपनी प्रजा की रक्षा करना था, न कि उन्हें एक शापित कालकोठरी में कैद करना।

राजा की आँखों में आँसू भर आए। उनके चेहरे से उन्माद और गर्व गायब हो गया और एक गहरा अफसोस झलक रहा था। उन्होंने कांपते हाथों से सोने का कटोरा विक्रम की ओर बढ़ाया। “यद्यपि तुम उम्र में छोटे हो, विक्रम, ज्ञान में मुझसे कहीं अधिक परिपक्व हो। तुम सचमुच इस वंश के उद्धारकर्ता हो। अब मैं इस शापित अमृत के साथ क्या करना है, इसका निर्णय तुम्हें सौंपता हूँ।”

विक्रम ने बड़े आदर के साथ राजा के हाथ से पात्र ले लिया। दरबार के बीचोंबीच एक विशाल, पवित्र अग्निकुंड था, जिसमें हजारों वर्षों बाद अग्नि प्रज्वलित हुई थी। विक्रम अग्निकुंड के पास गया। उसने नीले, चमकीले, आकर्षक अमृत पर एक नज़र डाली और बिना एक पल भी सोचे, पूरा पात्र धधकती अग्नि में उड़ेल दिया!

जैसे ही अमृत अग्नि में गिरा, एक विशाल, नीली और सफेद ज्वाला भड़क उठी। प्रांगण से आकाश तक पहुँचने वाला प्रकाश का एक स्तंभ निकला। ज्वालाओं से विचित्र और भयानक आवाजें आ रही थीं, मानो प्रकृति के विरुद्ध विद्रोह करने वाली कोई रहस्यमयी शक्ति जल रही हो। कुछ ही क्षणों में, आग शांत हो गई और नीला रंग हमेशा के लिए गायब हो गया।

जैसे ही वह अमृत नष्ट हुआ, स्वर्ण नगरी में एक और अद्भुत चमत्कार घटित होने लगा। महल की दीवारें और पूरा नगर, जो सोने, हीरे और माणिक से जड़े हुए थे, धीरे-धीरे अपना चकाचौंध

भरा और अप्राकृतिक सुनहरा रंग खोने लगे। सोने की ईंटें एक मजबूत, काले और सुंदर पत्थर में बदलने लगीं। हीरे और क्रिस्टल गायब हो गए और उनकी जगह लकड़ी और पत्थर की सुंदर नक्काशी दिखाई देने लगी। सुवर्णगिरि अब सोने का नगरी नहीं, बल्कि एक प्राचीन, शांत और सुंदर ऐतिहासिक नगरी बन गया था। वहाँ सोने की अप्राकृतिक लालसा हमेशा के लिए मिट गई थी। प्रकृति ने एक बार फिर इस भूमि को अपना बना लिया था।

लोग इस बदलाव से हैरान थे, लेकिन उन्होंने राहत की सांस ली। उनके दिलों में पल रहा एक अनजाना डर हमेशा के लिए गायब हो गया था।

राजा विक्रमादित्य ने विक्रम को गले लगाया। “तुमने हम सबको मुक्त कर दिया है। यह नगर अब सोने का नहीं बना है, लेकिन अब यह वास्तव में जीवंत है। मैं चाहता हूँ कि तुम हमारे साथ यहीं रहो।”

लेकिन विक्रम ने विनम्रतापूर्वक इनकार कर दिया। "महाराज, मेरा मार्ग और मेरी दुनिया अलग है। मैं अपने घर, अपने लोगों के पास लौटना चाहता हूँ। मेरा जीवन सही मायने में तभी पूर्ण होगा जब मैं उसी गाँव में जन्म लूँगा। यहाँ का काम अब समाप्त हो चुका है।"

राजा विक्रम को विदाई देने की तैयारी में जुट गए। राजपुजारियों ने विक्रम को आशीर्वाद दिया। विक्रम अपनी वापसी यात्रा पर निकल पड़े।

वापसी का सफर बिलकुल अलग और अद्‌भुत था। जब विक्रम सुवर्णगिरि से निकला, तो वहाँ बर्फीला तूफान नहीं था, बल्कि खूबसूरत, हरे-भरे और फूलों से भरे पहाड़ थे। वह जहरीला लावा क्षेत्र और खाई अब साफ और मीठे पानी की झील में बदल गई थी। और वह मायावी, भयानक जहरीला जंगल अब फूलों और चहचहाते पक्षियों से भरे एक सुंदर, फलों से लदे मैदान में बदल गया था। श्राप हटते ही प्रकृति ने अपने सारे घाव भर दिए थे।

इस पूरी यात्रा को पूरा करने के बाद, प्रकृति के इस सुंदर रूप को अपनी आँखों में संजोए हुए, विक्रम कुछ दिनों बाद अपने गाँव 'ताम्हंगड़' के द्वार पर पहुँचा। गाँव पहले जैसा ही शांत और सरल था। जब विक्रम गाँव में दाखिल हुआ, तो धोंडीबा तात्या हमेशा की तरह बरामदे में बैठकर कुछ पुराने पन्ने पढ़ रहे थे। विक्रम को देखकर तात्या की आँखों में आँसू आ गए। वे दौड़कर आगे बढ़े और विक्रम को गले लगा लिया।

"अरे वाह! तुम वापस आ गए! मुझे लगा था कि वो मनहूस सड़क..." तात्या के शब्द उसके गले में अटक गए।

विक्रम ने मुस्कुराते हुए कहा, "तात्या, वह सड़क अब शापित नहीं रही। सुवर्णगिरि का रहस्य अब हमेशा के लिए सुलझ गया है।"

विक्रम ने अपने थैले से सूर्यकांतमणि, अग्निरत्न और वरुणमणि तीनों रत्न निकाले और उन्हें अपने पिता के हाथों में रख दिया। ये रत्न अब जादुई नहीं रहे थे। वे महज़ तीन अत्यंत दुर्लभ, सुंदर और बहुमूल्य पत्थर बन गए थे, जिनकी मायावी शक्ति समाप्त हो चुकी थी। विक्रम सुवर्णगिरि से कोई सोना या धन-दौलत नहीं लाया था। लेकिन वह अपने साथ एक ऐसा अनुभव, एक ऐसा सबक और एक ऐसी कहानी लाया था जो किसी भी सोने से हज़ार गुना अधिक मूल्यवान थी।

उस रात, पूरा गाँव पारा में इकट्ठा हुआ था, और विक्रम उन्हें वह दिल दहला देने वाली, आँखें खोल देने वाली और प्रकृति से ओतप्रोत कर देने वाली कहानी सुना रहा था। सुवर्णगिरि का इतिहास अब अभिशाप नहीं रहा, बल्कि वीरता, बलिदान और सच्चे मानवीय मूल्यों का एक अमर पाठ बन गया था। विक्रम ने एक खोई हुई दुनिया को फिर से प्रकाश में लाया था, और इस प्रक्रिया में, उसने वास्तव में स्वयं को पा लिया था।

*******(समाप्त) *******

sjeet

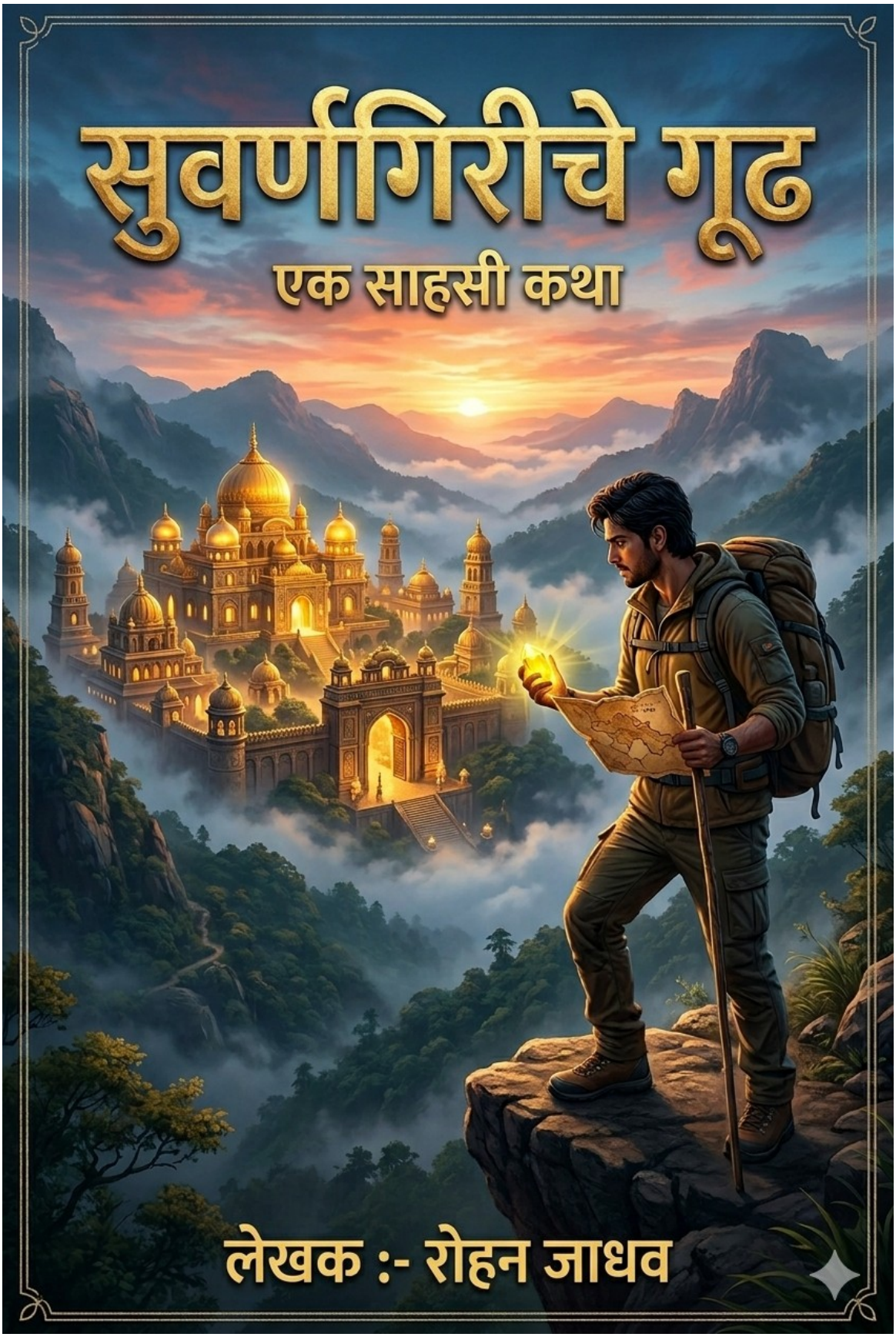
सुवर्णगिरीचे गूढ
एक साहसी कथा
लेखक :- रोहन जाधव